इन्सान की पैदाइश का बुनियादी मक्सद

मुफ्ती तकी उस्मानी दब.

इस्लाही खुत्बात/१ हिन्दी से एक हिस्से का खुलासा है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

कुरान करीम सूरे ज़ारियात/56 में अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया कि तरजुमा- यानी मेने जिन्नात और इन्सानो को सिर्फ एक काम के लिए पैदा किया, वो ये कि मेरी इबादत करे, इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने इन्सान की पैदाइश का बुनियादी मक्सद ये बताया कि वो अल्लाह की इबादत करे.

यहां बाज़ लोगों को खास कर नई रोशनी के लोगों को ये शुबह होता है कि अगर इन्सान की पैदाइश का मकसद सिर्फ इबादत था, तो इस काम के लिए इन्सान को पैदा करने की क्या ज़रूरत थी? ये काम तो फरिश्ते पहले से बहुत अच्छी तरह अन्जाम दे रहे थे? और अल्लाह की इबादत तसबीह और पाकी बयान करने में लगे हुए थे, यही वजह है कि जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (अलै) को पैदा फरमाने का इरादा किया और

फरिश्तों को बताया कि में इस तरह का एक इन्सान पैदा करने वाला हूं तो फरिश्तों ने एक-दम ये कहा कि आप एक ऐसे इन्सान को पैदा कर रहे है, जो ज़मीन में फसाद मचाएगा और खून बहाएगा और इबादत, तसबीह और पाकी बयान करने हम अन्जाम दे रहे है, इसी तरह आज भी एतराज करने वाले ये एतराज कर रहे है कि इन्सान की पैदाइश का मक्सद सिर्फ इबादत होता तो इसके लिए इन्सान को पैदा करने की ज़रूरत नहीं थी, ये काम तो फरिश्ते पहले ही अन्जाम दे रहे है.

फरिश्तों का कोई कमाल नहीं

बेशक अल्लाह तआला के फरिश्ते अल्लाह तआला की इबादत कर रहे थे, लेकिन उनकी इबादत बिल्कुल मुख्तलिफ किस्म की थी और इन्सान के सुपुर्द जो इबादत की गई है वो बिल्कुल मुख्तलिफ किस्म की थी, इसलिए कि फरिश्ते जो इबादत कर रहे थे, उनके मिज़ाज में उसके खिलाफ करने का इम्कान ही नहीं था, वे अगर चाहे कि इबादत ना करे तो उनके अन्दर इबादत छोडने की सलाहियत नहीं, अल्लाह तआला ने

उनके अन्दर से गुनाह करने का इम्कान ही खत्म फरमा दिया और ना उन्हें भूख लगती है और ना उनको प्यास लगती है और ना उनके अन्दर शहवानी तकाज़ा पैदा होता है, यहां तक कि उनके दिल में गुनाह का वस्वसा भी नहीं गुज़रता, गुनाह की ख्वाहिश और गुनाह पर चलना तो दूर की बात है, इसलिए अल्लाह तआला ने उनकी इबादत पर कोई अज़र और सवाब भी नहीं रखा, क्युकी अगर फरिश्ते गुनाह नहीं कर रहे है तो इसमे उनका कोई कमाल नहीं और जब कोई कमाल नहीं तो फिर जन्नत वाला अज़र और सवाब भी मुरत्तब नहीं होगा.

अंधे का बचना कमाल नहीं

जैसे एक शख्स बीनाई (निगाह) से महरूम है, जिसकी वजह से सारी उमर उसने ना कभी फिल्म देखी, ना कभी टी. वी. देखा और ना कभी गैर मेहरम पर निगाह डाली, बताईये कि इन गुनाह के ना करने में उसका क्या कमाल जाहिर हुआ? इसलिए कि उसके अन्दर इन गुनाहों के करने की सलाहियत ही नहीं. लेकिन एक दुसरा सख्स जिसकी निगाह बिल्कुल ठीक है, जो

चीझ चाहे देख सकता है, लेकिन देखने की सलाहियत मौजूद होने के बावजूद जब किसी गैर मेहरम की तरफ देखने का तकाज पैदा होता है, वो फौरन सिर्फ अल्लाह तआला के खौफ से निगाह नीचे कर लेता है, अब बज़ाहिर दोनों गुनाहों से बच रहे है, लेकिन दोनों में ज़मीन आसमान का फर्क है, पहला शख्स भी गुनाह से बच रहा है और दूसरा भी गुनाह से बच रहा है, लेकिन पहले शख्स का गुनाह से बचना कोई कमाल नहीं और दूसरे शख्स का गुनाह से बचना कमाल है.

ये इबादत फरिश्तों के बस में नहीं है

इसलिए अगर फरिश्ते सुबह से शाम तक खाना ना खाए ये कोई कमाल नहीं, इसलिए कि उन्हें भूख ही नहीं लगती, उन्हें खाने की हाजत ही नहीं, इसलिए उनके ना खाने पर अज़्र और सवाब भी नहीं, लेकिन इन्सान इन तमाम हाजतों को पैदा हुआ है, इसलिए कोई इन्सान कितने ही बडे से बडे मकाम पर पहुंच जाए, यहां तक कि सबसे आला मकाम यानी नुबुव्वत पर पहुंच जाए तब भी वो खाने पीने से बे-परवाह नहीं हो सकता.

चुनांचे काफिरों ने नबियों पर यही एतराज किया कि सूरे फुरकान/7 तरजुमा- यानी ये रसूल कैसे है जो खाना भी खाते है और बाजारों में चलते फिरते है, तो खाने का तकाज़ा नबियों के साथ भी लगा हुआ है, अब अगर इन्सान को भूख लग रही है, लेकिन अल्लाह के हुक्म की वजह से खाना नहीं खा रहा है, तो ये कमाल की बात है, इसलिए अल्लाह तआला ने फरिश्तों से फरमाया कि में एक ऐसी मखलूक पैदा कर रहा हूं, जिसको भूख भी लगेगी, प्यास भी लगेगी और उसके अन्दर शहावानी तकाजे भी पैदा होंगे और गुनाह के जज़्बात भी उनके अन्दर पैदा होंगे, लेकिन जब गुनाह का जज़्बा पैदा होगा, उस वकत वो मुझे याद कर लेगा और मुझे याद करके अपने नफ्स को उस गुनाह से बचा लेगा.

उसकी ये इबादत और गुनाह से बचना हमारे यहां कदर और कीमत रखता है और जिसका अज़र और सवाब और बदला देने के लिए हमने ऐसी जन्नत तैयार कर रखी है, जिसकी सिफत है इसलिए कि उसके दिल में जज़्बा और तकाज़ा हो रहा है और ख्वाहिशात पैदा हो रही है और गुनाह के मुहररिकात

सामने आ रहे है, लेकिन ये इन्सान हमारे खौफ और हमारी अजमत के तसव्वुर से अपनी आंख को गुनाह से बचा लेता है, अपने कान को गुनाह से बचा लेता है, अपनी ज़बान को गुनाह से बचा लेता है और गुनाहों की तरफ उठते हुवे कदमों को रोक लेता है, ताकी मेरा अल्लाह मुझसे नाराज़ ना हो जाए, ये इबादत फरिश्तों के बस में नहीं थी, इस इबादत के लिए इन्सान को पैदा किया गया.

हज़रत यूसुफ (अलै) का कमाल

हज़रत यूसुफ (अलै) का जो फितना ज़ुलेखा के मुकाबले में पेश आया, कौन मुसलमान ऐसा है जो उसको नहीं जानता, कुरान करीम कहता है कि ज़ुलेखा ने हज़रत यूसुफ (अलै) को गुनाह की दावत दी, उस वकत ज़ुलेखा के दिल में भी गुनाह का ख्याल पैदा हुआ और हज़रत यूसुफ (अलै) के दिल में भी गुनाह का ख्याल आ गया, आम लोग तो इससे हज़रत यूसुफ (अलै) पर एतराज और उनकी कमी बयान करते है, हालांकि कुरान करीम ये बतलाना चाहता है कि गुनाह का ख्याल आ जाने के

बावजूद अल्लाह तआला के खौफ और उनकी अजमत के इस्तिहज़ार (दिल में मौजूद होने) से उस गुनाह के ख्याल पर अमल नहीं किया और अल्लाह तआला के हुक्म के आगे सरे तसलीम खम कर लिया.

लेकिन अगर गुनाह का ख्याल भी दिल में ना आता और गुनाह की सलाहियत ही ना होती और गुनाह का तकाज़ा ही पैदा ना होता, तो फिर हज़ार मरतबा ज़ुलेखा गुनाह की दावत दे फिर तो कमाल की कोई बात नहीं थी, कमाल तो ये था कि गुनाह की दावत दी जा रही है और माहौल भी मौजूद, हालात भी साज़गार और दिल में ख्याल भी आ रहा है, लेकिन इन सब चिझो के बावजूद अल्लाह के हुक्म के आगे सरे तसलीम खम करके फरमाया कि “मआज़ल्लाह” कि में अल्लाह की पनाह चाहता हूं, ये इबादत है जिसके लिए अल्लाह तआला ने इन्सान को पैदा फरमाया.

हमारी जानों का सौदा हो चुका है

जब इन्सान की पैदाइश का मकसद इबादत है तो इसका तकाज़ा ये था कि जब इन्सान दुन्या में आये तो सुबह से लेकर

शाम तक इबादत के अलावा कोई और काम ना करे और उसको दूसरे काम की इजाजत ना होनी चाहिये, चुनांचे दूसरी जगह कुरान करीम ने फरमाया सूरे तौबा/१११ तरजुमा- यानी अल्लाह तआला ने मोमिनो से उनकी जाने और उनके माल खरीद लिए और इसका मुआवज़ा ये मुकर्रर किया कि आखिरत में उनको जन्नत मिलेगी, जब हमारी जाने बिक चुकी है, तो ये जाने जो हम लिए बैठे है, वे हमारी नहीं है, बल्की बिका हुआ माल है, इसकी कीमत लग चुकी है.

जब ये जान अपनी नहीं है इसका तकाज़ा ये था कि, इस जान और जिस्म को सिवाये अल्लाह की इबादत के दूसरे काम में ना लगाया जाए, इसलिए अगर अल्लाह तआला की तरफ से ये हुक्म दिया जाता कि तुम्हें सुबह से शाम तक दूसरे काम करने की इजाजत नहीं, बस सिर्फ सज्दे में पडे रहा करो और अल्लाह अल्लाह किया करो, दूसरे कामों की इजाजत नहीं, ना कमाने की इजाजत है ना खाने की इजाजत है, तो ये हुक्म इन्साफ के खिलाफ ना होता, इसलिए कि पैदा ही इबादत के लिए किया गया है.

ऐसे खरीदार पर कुरबान जाइये

लेकिन कुरबान जाइये ऐसे खरीदार पर कि अल्लाह तआला ने हमारी जान और माल को खरीद भी लिया और उसकी कीमत भी पूरी लगा दी, यानी जन्नत, फिर वो जान और माल हमे वापस भी लौटा दिया कि ये जान और माल अपने पास रखो और हमे इस बात की इजाजत देदी कि खावो, पियो, कमाओ और दुन्या के कारोबार करो, बस पांच वकत की नमाज़ पढलिया करो और फलां फलां चिझो से परहेज़ करो, बाकी जिस तरह चाहो करो, ये अल्लाह तआला की अज़ीम रहमत और इनायत है.